

छँड़ाना स.क्रि. (देश.) छीन लेना, दूसरे के हाथ से बलपूर्वक ले लेना।

छँड़ुआ वि. (देश.) 1. छोड़ा हुआ, मुक्त 2. जो दंड आदि से मुक्त हो 3. जिसके ऊपर किसी का दबाव या शासन न हो।

छ पुं. (तद्.) भाग, हिस्सा **वि.** हिस्सा करने वाला, छह की संख्या **पुं. (तत्.)** 1. काटना 2. ढाँकना, आच्छादन 3. घर 4. खंड, टुकड़ा **वि.** 1. निर्मल, साफ 2. तरल, चंचल।

छक स्त्री. (देश.) 1. तृप्ति, परिपूर्णता 2. मद, नशा 3. आकांक्षा, लालसा।

छकड़ा पुं. (देश.) बोझ लादने की दुपहिया गाड़ी जिसे बैल खींचते हैं, बैलगाड़ी, सगगड़ जिसका ढाँचा-ढीला हो गया हो, जिसके अंजर पंजर ढीले हो गए हों, जीर्ण-शीर्ण और पुराना।

छकड़ी स्त्री. (देश.) 1. छह का समूह। छह की राशि 2. वह पालकी जिसे छह कहार उठाते हो, छकड़िया 3. चारपाई बुनने का एक ढंग जिसमें छह बाण उठाए और छह बैठाए जाते हैं।

छकना अ.क्रि. (देश.) 1. खा पीकर अघाना, तृप्त होना, अफरना 2. नशे में चूर होना 3. हैरान होना 4. चतुरता 5. कौशल आदि में परास्त होना 6. चकराना, अचंभे में पड़ना।

छकाछक क्रि.वि. (देश.) 1. तुप्त, अघाया हुआ, संतुष्ट 2. परिपूर्ण, भरा हुआ 3. उन्मत्त, नशे में चूर।

छकाना स.क्रि. (देश.) 1. खिला पिलाकर तृप्त करना 2. मद्य आदि से मदमत्त करना, चालाकी से किसी को हरा देना 3. अचंभे में डालना 4. हैरान करना, तंग करना।

छक्का पुं. (देश.) 1. छह अवयवों वाली वस्तु, छह का समूह 2. जुए के चार दाँवों में से एक मुहा. छक्का पंजा- दाँव पेंच, चालबाजी 3. जुए का एक दाँव जिसमें पासा फेंकने से छह बिंदियाँ ऊपर पड़े 4. जुआ, द्युत 5. छह बूटियों वाला तारा 6. पाँच ज्ञानेंद्रियों और छठे मन का समूह, होश-हवास, चेतना, संज्ञा मुहा. छक्के छूटना- होश

हवास खो देना, साहस खत्म हो जाना, घबड़ा जाना प्रयो. कल नेताजी की बात सुनकर सभी के छक्के छूट गए, नई फौज के आते ही दुश्मनों के छक्के छूट गए।

छग पुं. (तद्.) छाग, बकरा।

छगड़ा/छगरा पुं. (तद्.) बकरा।

छगन पुं. (तद्.) छोटा बच्चा, प्रिय बालक।

छगमय पुं. (तत्.) 1. बकरे जैसी आकृति वाला 2. कार्तिकेय का बकरे जैसा छठा मुख।

छगल पुं. (तद्.) 1. छाग, बकरा 2. अत्रि ऋषि का नाम।

छगुनी स्त्री. (देश.) हाथ के पंजे की सबसे छोटी उँगली, कनिष्ठिका।

छछिया स्त्री. (देश.) 1. छाछ पीने का या मापने का बर्तन 2. छाछ, मट्ठा, तक्र जैसे- गोपियाँ कृष्ण को छछिया भर छाछ के लिए नाच नचाती थी।

छछूंदर/छुछुंदर पुं. (तत्.) 1. चूहे की जाति का एक जीव 2. एक प्रकार का यंत्र या ताबीज जिसे राजपूतानों में पुरोहित अपने यजमानों को पहनाता है 3. एक आतिशबाजी जिसे छोड़ने पर छू-छू शब्द होता है 4. वह व्यक्ति जो छूछूंदर की तरह इधर उधर भटकता रहता है।

छजना अ.क्रि. (देश.) 1. शोभा देना, सजना, अच्छा लगना 2. उपयुक्त होना, ठीक जँचना, उचित लगना।

छज्जा पुं. (देश.) 1. छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है 2. कोठे का वह भाग जो कुछ दूर तक दीवार के बाहर निकला रहता है, उस पर लोग बाहर का दृश्य देखने के लिए बैठते हैं 3. दीवार के बाहर निकली हुई पत्थर की पट्टी 4. टोपी या टोप के किनारे का निकला हुआ वह भाग जिससे धूप से रक्षा होती है।

छटकी स्त्री. (देश.) 1. एक सेर का सोलहवाँ भाग वाला तौल, जिससे कोई वस्तु तोली जाए 2. एक छटाँक का बाट **वि.** 1. बहुत छोटा, छटाँक भर का, दुबला पतला, थोड़ा 2. नटखट, चंचल (बालक)।